May2015
TODAY
(NEWSLETTER OF EURASIA REIYUKAI)
Year : 3, Vol. 23
www.eurasiareiyukai.com

"मैं यूराशिया रेयूकाई का दिव्यज्योतिमय सदस्य हूँ" ऐसा कहते हुए सभी मिलनों में सदस्यों के साथ-साथ वाचन करें।

संस्थापक अध्यक्ष जी द्वारा विगत २४ फरवरी को १७वीं शाखा के भव्य मिलन समारोह में प्रदान किये गये मार्गनिर्देशन के सारांश :

- यूराशिया रेयूकाई में नीलसूत्र पूर्वजस्मरण है, ऐसा कहकर शायद प्रवेश लिए होंगे। नीलसूत्र को मन की बीमारी ठीक करने वाली औषधि कहते हैं। शरीर की बीमारी तो डाक्टर ठीक करते हैं। मन की बीमारी को डाक्टर ठीक नहीं कर सकते।
- हम पूर्वजस्मरण की राह पर चल रहे हैं, अब से अपना स्वयं का विकास करें और देश का विकास करें। विश्वशांति निर्माण करने के कार्य करने का नेतृत्व, आज से विचार करने का तरीका, जीने का तरीका बदल दें, ऐसा कहना चाहता हूँ।
- मैं भी युवा अवस्था में आने के बाद गंभीरतापूर्वक सोचता था कि रेयूकाई शिक्षा क्या होगी ? ऐसा करने से पहले हम क्यों मनुष्य के रुप में जन्म लिए हैं, रेयूकाई ने यह बात सिखा दी। जानवर के रुप में जन्म लेकर नहीं आए हैं, मनुष्य के रुप में जन्म लेने के बाद मनुष्य की तरह जीवनयापन नहीं करने से नहीं होगा।
- जीवन और शरीर अभिभावकों ने दिया है, लेकिन सम्बन्धित व्यक्ति कोई न कोई जिम्मेवारी और कर्तव्य लेकर आया है। यह बात केवल मेरे साथ न रहकर, हम सभी जीवित लोगों के साथ है, यह हमें महसूस होने लगा।
- आज विश्व भर में जलवायु परिवर्तन की बड़ी समस्या की बात सामने है। उसी तरह दूसरी बड़ी समस्या परस्पर मार-काट चलने की है। जिस तरह से हो इस संसार को अच्छा बनाकर आगे ले जाने की भावना मनुष्यों की ही है। जानवर में भी यह भावना नहीं रहती। इसलिए मनुष्य के रुप में जन्म लेने के प्रति कृतज्ञ नहीं होने से नहीं होगा, क्योंकि इस बुरे संसार को अच्छाई की ओर परिवर्तन करते हुए ले जाने की जिम्मेवारी और कर्तव्य आने की बातों के प्रति हमें कृतज्ञ होना पड़ेगा।
- पैसों से जीवन परिवर्त्तन नहीं हो सकता। अपने भाग्य को परिवर्त्तन करने के लिए स्वयं के अलावा कोई और नहीं कर सकता। इसलिए अपनी अंतरात्मा को विकसित करने के लिए अपने भाग्य को स्वयं परिवर्त्तित करते हुए ले जाएं।
- किसी भी धर्म से जुड़े हैं तो वह तो उस घर-परिवार, देश की संस्कृति हे, उसे करना पड़ेगा। रेयूकाई शिक्षा के स्तम्भ अपने साथ सम्बन्धित रहने वाले असंख्य पूर्वजों की आत्मा को बचाने, और नहीं बचा सकने पर भी बचाने वाले स्थान पर हैं। इसे ही बोधिसत्व कहते हैं। आपलोग भी बोधिसत्व हैं। आपलोग देश का खजाना हैं। औरों के बारे में सोचने से भी ऊपर उस व्यक्ति को जीवन जीने का तरीका सोचने में लगाएं, जीवन के श्रोत के रुप में रहने वाले पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ होने में लगाएं।
- मुस्कानयुक्त चेहरा है तो सामने वाले व्यक्ति के मन का द्वार भी खुलता है और अपना मन भी खुलता है।
- "इस समाज को परिवर्तन करते ले जाएं"- ऐसा कहते हुए गांव-नगर में साफ-सफाई का अभियान चला रहे हैं। सदस्यों एवं गैरसदस्यों के साथ सक्रिय होकर गांव-नगर को साफ-सुथरा रखने के अभियान का नेतृत्व लेकर देश के प्रति गुण लौटाएं। नेपाल-भारत देशों का विकास करें। यूराशिया महाद्वीप को बचाने का मौका पाएं, यह विश्वशांति निर्माण के कदम हैं।
- रेयूकाई की शिक्षा का स्वयं कार्यान्वयन कर आपलोग अपने घर-परिवार बनाएं और इसे चारों ओर फैलाते जाएं।

यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी के कर-कमलों द्वारा एम्बुलेंस का उद्घाटन

दिनांक २१ अप्रैल २०१५ को यूराशिया रेयूकाई संस्थापक अध्यक्ष जी के कर-कमलों द्वारा यूराशिया रेयूकाई एम्बुलेंस सेवा का उद्घाटन यूराशिया रेयूकाई प्रधान कार्यालय सिलीगुड़ी में सम्पन्न हुआ। उक्त एम्बुलेंस सेवा भारत देश के कालिम्पोंग क्षेत्र में संचालित होगी।

हम हार्दिक समवेदना एवं सहानुभूति प्रकट करते है

नेपाली तिथि १२ बैशाख २०७२ तदनुसार २५ अप्रैल २०१५ दिन शनिवार को नेपाल एवं भारत देश में आए महाभूकंप में अपनी जान गवाएं लोगों के प्रति हमें हार्दिक श्रद्धांजलि तथा मृतकों के परिजनों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

इस अकल्पनीय प्राकृतिक आपदा की दुखद घटना की चपेट में आकर घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हैं। इस बड़ी आपदा में काफी बड़े जन-धन की क्षति तथा भौतिक संरचनाओं व ऐतिहासिक धरोहरों को पहुंचे नुकसान से हम काफी मर्माहत हुए हैं। इस दुखद घड़ी से शीघ्र सम्पूर्ण घर-परिवार, समाज व राष्ट्र उबर सके और उनका पुनर्निर्माण हो सके, ऐसी दृढ़ उम्मीद रखते हैं। हम सम्पूर्ण सदस्य अपने-अपने क्षेत्र से यथासंभव सहयोग देकर देश का पुनर्निर्माण करने के कार्य में अग्रसर होकर परस्पर सहयोग करते हुए इस देश को पहले की तरह स्वस्थ स्थिति में लौटाने के कार्य में सफलता अर्जित हो, ऐसी कामना करते हैं।

यूराशिया रेयूकाई